[kksjBk dk izeq[k dfo ,oa mudk dkO; % ,d fo'ys"k.kkRed v/;;u

झारखण्ड राज्य भारत की 28वीं राज्य हैं। इस राज्य में विभिन्न प्रकार की खनिज सम्पदा पायी जाती है। झारखण्ड में विभिन्न जनजातीय समूहों पाई जाती है। यहाँ की भाषा एवं संस्कृति में विविधता पायी जाती है। झारखण्ड राज्य में विभिन्न प्रकार की भाषायें और बोलियाँ पाई जाती है। परन्तु मुख्य रूप से नौ प्रकार की जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं का अध्यापन के रूप में प्रयोग किया जाता है। झारखण्ड की जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं को मुख्यतः दो भागों में विभाजित की गयी है। 1) जनजातीय भाषायें 2) क्षेत्रीय भषायें। जनजातीय भाषाओं के अन्तर्गत संथाली, मुण्डारी, हो, खड़िया तथा कुँडुख़ है। झारखण्ड में भाषायी आधार पर जनजातीय भाषाओं को ऑस्ट्रो–एशियाटिक एवं द्रविड भाषा परिवार में विभाजित किया गया है। क्षेत्रीय भाषा के अन्तर्गत खोरठा, नागपुरी, कुरमाली तथा पंचपरगनिया भाषायें बोली जाती है। इन सभी भाषाओं का अध्ययन एवं अध्यापन कार्य स्कूली स्तर एवं विश्वविद्यालय स्तर पर चल रही है।

झारखण्ड की क्षेत्रीय भाषाओं में सबसे अधिक मातृभाषा के रूप में खोरठा भाषा का प्रयोग किया है। इस भाषा का विकास निरंतर जारी है। खोरठा भाषा में साहित्य की अधिकांश विधाओं में कार्य जारी है, जिससे साहित्यिक विकास भी निरंतर जारी है। खोरठा के भाषिक एवं साहित्य के विकास में खोरठा के विभिन्न कवि एवं साहित्यकारों का योगदान रहा है।

खोरठा भाषा को उद्‌भव के संबंध में जानकारी इकट्‌ठा कर पाना कठिन है। भारतीय भाषा विद्वानों ने भाषा उद्‌गम (उत्पत्ति) के संबंध में दायित्व सिद्धान्त, प्रकृति सिद्धान्त, श्रम–ध्वनि सिद्धान्त, अनुकरण सिद्धान्त, विकासवादी सिद्धान्त तथा संकेत सिद्धान्त को माना है। खोरठा भाषा विकास के संबंध में विभिन्न भाषाविदों ने सर्वमान्य विकासवादी सिद्धान्त को माना है।

खोरठ भाषा की उद्गम के संबंध में विभिन्न साहित्यकारों एवं विद्वानों में एकरूपता नहीं पायी जाती है। इसलिए इसकी सर्वमान्य लिपि देवनागरी है। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक एवं लेखक डॉ0 ए0के0 झा का कहना है कि खोरठा भाषा मोहनजोदड़ो हड़प्पा काल में बोली के रूप में प्रचलित थी। उनका तर्क खरोष्ठी–खरोठी–खोरोठी–खोरोठा–खोरठा अंततः खोरठा में तादात्मय (अभेद) रखता है। इतना तो तय है कि यह भाषा प्राचीन काल से निरंतर झारखण्ड की धरती पर चली आ रही है। झारखण्ड निर्माण से पूर्व खोरठा भाषा कि स्थिति काफी दैनीय थी, परन्तु वर्त्तमान में यह एक विकसित भाषा के रूप में निरंतर आगे बढ़ रही है। वर्त्तमान में खोरठा भाषा का आधुनिक साहित्य काफी समृद्ध हो चुकी है। खोरठा भाषा की पहली मासिक पत्रिका ''मातृभाषा'' क प्रकाशन जनवरी, 1957 ई0 में धनबाद से हुआ था।

1957 ई0 में आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना और 1980 ई0 में राँची विश्वविद्यालय, राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा की स्थापना हुई। जिससे खोरठा भाषा साहित्य का विकास में काफी सहायता प्राप्त हुए, जिसके परिणाम स्वरूप खोरठा भाषा में नये–नये खोरठा कवि, लेखक, गायक एवं रचनाकारों का उद्य होते चला गया तथा खोरठा भाषा साहित्य की सभी विधाओं में शोध कार्य निरंतर जारी है।

प्राचीनकाल से ही खोरठा साहित्य में एक से बढ़कर एक साहित्यिकार आ रहे है, जिन्होंने अपनी रचना तथा काव्य सौंदर्य में अन्य भाषियों को आकर्षित किया है। वर्त्तमान में खोरठा साहित्य में शिष्ट साहित्य की विकास निरंतर जारी है, जिसमें अनेक साहित्यकारों का योगदान प्राप्त होता जा रहा है। झारखण्ड आन्दोलन में इस भाषा ने झारखण्डियों को संगठित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नये–नये कवि लेखक अपने गीत एवं कविताओं से सम्पूर्ण झारखण्ड आन्दोलन को क्रांति से ओत–प्रोत किया है। आधुनिक कवियों में

श्रीनिवास पानुरी, विश्वनाथ दसौंधी 'राज', डॉ0 ए0के0 झा, डॉ0 महेन्द्र नाथ गोस्वामी, डॉ0 विनोद कुमार, डॉ0 श्याम सुन्दर केवट, प्रो0 कुमारी शशि, दिनेश दिनमणि तथा डॉ0 आनन्द कुमार दांगी आदि। अपने मूल्यवान रचनाओं से खोरठा भाषा साहित्य को समृद्ध कर रहे है। खोरठा साहित्यकारों में कवि शिवनाथ प्रमाणिक, डॉ0 चतुर्थभुज साहु, बंशीलाल 'बंशी', चितरंजन महतो 'चित्रा', जनार्दन गोस्वामी, 'व्यथित, नागेश्वर महतो, गिरधारी गोस्वामी 'आकाशखूंटी', गोविन्द महतो, 'जंगली', प्रदीप कुमार 'दीपक', पारसनाथ महतो, कृष्णचन्द्र, दास 'आला', डॉ0 गजाधर महतो 'प्रभाकर', परितोष कुमार प्रजापति, धनपत महतो, शांति भारत, शिवनन्दन पाण्डेय, 'गरीब', बासू बिहारी, डॉ0 अर्चना कुमारी, डॉ0 निरंजन कुमार, मनपूरन गोस्वामी आदि प्रमुख हैं।

किसी कवि के अन्दर सृजन की प्रतिभा ही स्वाभाविक होती है। बाकी उसके विकास स्तार के सहयोगी तब से बाहरी एवं परिस्थिति के अनुसार जन्म होते है। अपने लेखन से गढ़े गए तराशे शोधित किए गये किसी लेखक एवं साहित्यकार की सबसे अद्भूत विशेषता यह होती है कि वह दोहरे व्यक्तित्व का न होकर एक व्यक्तित्व का स्तंभ होता है। कई बार तो ऐसा भी होता है कि कई साहित्यकार अपनी रचनाओं से सुदृढ़ व्यक्तित्व के कारण सृजन की ओर शेष समाज को आकर्षित करता है, किन्तु श्रीनिवास पानुरी, डॉ0 ए0 के0 झा, विश्वनाथ प्रमाणिक, डॉ0 गजाधर महतो 'प्रभाकर', डॉ0 विनोद कुमार, प्रो0 कुमारी शशि, आदि कवियों ने अपनी लेखन और कविता गीत संगीत में पूरे मेहनत क साथ महान और बहुआयामी व्यक्तित्व को निखारा हुआ रूप दर्शाते है।

साहित्य रचना की दो विधाएँ है गद्‌य एवं पद्‌य। इस विधा के अन्तर्गत काव्य एक ऐसी पद्‌य रचना है जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी एक विषय का वर्णित एक विशेष निजी, स्वच्छदंता और सजगता के साथ

किया जाता है। मनुष्य के साथ–साथ ही काव्य का जन्म हो जाता है। काव्य लक्ष्य सिर्फ मनोरंजन करना ही नहीं अपितु मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना है। काव्य वह रचना है, जिसमें किसी रस की परिपूर्णता होती है। काव्य छंद एवं मुक्तबद्ध दोनों में होती है। छंद वृत्त काव्य के लिए छंद के बुनियादी जानकारी वेद आवश्यक है। मुक्त छंद में लेखन के लिये भी इसकी ज्ञान की आवश्यकता है। कविता समय विशेष की उपज होती है, जिसका स्वरूप समय के साथ बदलता रहता है। यदि काव्य में शब्दों का महत्व नहीं होता है काव्य ही नहीं होती अर्थात् काव्य लेखन का महत्वपूर्ण उपकरण शब्द है। काव्य का निर्माण शब्दों के मेल–जोल से हुआ है। अर्थात् शब्दों का उचित चयन तथा प्रयोग ही काव्य की आत्मा बन जाती है, इसलिए काव्य सदैव गद्‌य से अगल गुण प्रदर्शित करती है।

श्रीनिवास पानुरी ने अपनी पुस्तक आंखीक गीत (कविता संग्रह) में झारखण्ड की परम्परा शोषित तथा मानवतावादी का उल्लेख किये है। डॉ0 ए0के0 झा जी खोरठा साहित्य के विकास में विभिन्न पुस्तकों में कार्य किये हैं, इन्होने अपनी पुस्तक ''खोरठा काठे पइदेक खंडी (कविता संग्रह), समाजेक सरजुइत निसाइन (काव्य संग्रह) में इन्होंने समाज के अंधविश्वास एवं पाखंडियों पर व्यंग करते हुए मानवतावादी भावों का उललेख किये है। डॉ0 बिनोद कुमार की पुस्तक 'सोंध माटी' में काव्यों के माध्यम से झारखण्ड के विभिन्न परिस्थितियों, जवान एवं किसान का गुणगान झारखण्ड की प्राकृति सौन्दर्य के भावों को दिखाया है। इस प्रकार खोरठा कार्यों में अधिकांश रूप में विस्थापन प्रकृति सौन्दय, किसानों एवं जवानों की महिमा एवं उनके कार्यों, शोषित लोगों के विरूद्ध, झारखण्ड की खनिज सम्पदा तथा प्राकृतिक वस्तु के गुणों आदि को विभिन्न कालों में भावों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

'kks/k fo"k; dh i`j.kk %&

खोरठा मेरी मातृभाषा रही है। खोरठा भाषा मेरे लिए एक अलग ही भूमिका निभाती है, जो कि खोरठा भाषा को बचपन से ही बोलता आ रहा हूँ। मेरे घर–परिवार के लोग सभी खोरठा अच्छी तरह से बोलते है जिसके कारण मैं खोरठा का और खोरठा भाषा मेरे हो गया है। ऐसा लगता है। खोरठा भाषा बोलने में मेरी रूचि शुरू से ही थी और खोरठा काव्य की बात करू तो अगर एक कवि दृष्टि से देखा जाए तो कविताएँ लिखने कि प्रेरणा कहीं से भी आ सकती है। एक छोटे से तिनके से भी और एक बड़े पेड़ से भी जरूरत होती है, तो बस चीजों को एक–दूसरे से जोड़ने की, उन्हें एक लयबद्ध तरीके से सोचने की। अगर मैं अपनी बात करूँ तो खोरठा लिखने की प्रेरणा अपने दैनिक जीवन से मिलती है।

'kks/k dk midj.k %&

1) शोध से संबंधित पुस्तकें

2) इंटरनेट / वेबसाईट

3) कम्प्यूटर

4) सीडी / टेप रिकॉर्डर

5) निर्देशक एवं विशेषज्ञों से विचार–विमर्श

6) मोबाईल

7) कैमरा (आवश्यक चित्रों, फोटो, खींचने एवं विडियों तैयार करने के लिए)

8) पत्र–पित्रकाएँ

9) पुस्तकालयों में अध्ययन

10) न्यूज–पेपर

lkfgR; voykdu ¼iwo e fd, x, 'kks/k@vkykpuk dk;k dk fooj.k½

प्रस्तावित शोध प्रबंध एक गहन अध्ययन करने के बाद इस विषय को लिया गया है। आज तक इस विषय में शोध कार्य नहीं किया गया है। परन्तु प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित खोरठा काव्यों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुके है। इस प्रस्तावित शोध विषय में खोरठा के प्रमुख कवियों एवं काव्य की विवेचना की गई है। अब तक खोरठा काव्यों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित से हमें सहायता प्राप्त होती होगी।

lekt ij 'kks/k dk iHkko ¼&

- खोरठा भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा।
- इससे खोरठा के प्रमुख कवियो एवं काव्यों का महत्व बढ़ेगा।
- खोरठा भाषा के शोधार्थियो को प्रकीर्ण काव्य से संबधित अन्य पहलुओं पर शोध हेतु प्रोत्साहन मिलेगा।
- भाषा–सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्र से संबंधित अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

ifjdYiuk ¼&

किसी विषय पर शोध की चर्चा करने से पहले मन में गहन सोच–विचार उत्पन्न होती है कि शोध कैसे होना चाहिए, खोरठा भाषा को लेकर मेरे मन में शुरू से उच्च विचार थे, कि खोरठा भाषा को बहुत आगे तक लेकर जाना है। गाँव, देहात में बोलने से कुछ लोग शर्म महशूस करते हैं और कुछ लोग खोरठा भाषा को हीन दृष्टि से देखते है। बस यही सोच–विचार को समाज से हमें दूर करना है। और खोरठा भाषा को उच्च स्तर तक ले के जाना है।

इसलिए मैंने सोचा कि क्यो ना हमारे खोरठा के प्रमुख कवियों के काव्यों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाए। इसके माध्यम से समाज में खोरठा के कवियों एवं काव्यों को विलुप्त होने से बचाया जा सके।

'kks/k dk mís'; %&

किसी शोध कार्य प्रारंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है।

- खोरठा भाषा के प्रमुख कवि एवं काव्य का गहन अध्ययन करना।
- खोरठा भाषा के कवियों के द्वारा रचित काव्य या कविताओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
- खोरठा भाषा के कवि एवं काव्य का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत करना।
- खोरठा के प्रमुख कवियों के सम्पूर्ण जीवन परिचय का अध्ययन करना।

शोध का महत्त्व :&

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता कि उसकी उपयोगिता समाज प्रदेश एवं देश के लिए ना हो। काव्य मनुष्य को जीवन जीने की सही शिक्षा देती है। अच्छे संस्कार देती है। इसके अतिरिक्त काव्य मानव मात्र को ऊँचे आदर्श, पवित्र धारण और अटल आस्था को धारण करने की ऊर्जा और शक्ति देती है। काव्य के माध्यम से जीवन का सत्य और सब प्रकार के अनुभवों को व्यक्त किया जा सकता है।

भावनात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यात्मक गुण जैसे लक्षण कविता के सार को परिभाषित करते है, जो इस साहित्यिक कला का एक अनुठा और मनोरंम रूप बनाते है। गहन प्रभाव के साथ भावनाओं को भक्त करने और सौंन्दर्यपूर्ण रूप से मनभावन रचनाएँ बनाने की अपनी क्षमता के माध्यम से कविता पाठकों को प्रेरित और प्रभावित करती रहती है।

'kks/k fof/k %&

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नांकित शोध विधियों को अपनाया जाएगा।

1) विश्लेषणात्मक विधि

2) अवलोकन विधि

3) साक्षात्कार विधि

4) प्रश्नावली विधि

5) सर्वेक्षण विधि

[kkjBk dh izeq[k dfo vkSj mudh dkO; % ,d fo'ys"k.kkRed v/;;u

iFke v/;k; & [kkjBk dkO; dk lkekU; ifjp;

क) खोरठा काव्य का उद्भव और विकास

ख) खोरठा काव्य की विशेषताएँ

ग) खोरठा काव्य के रूप

f}rh; v/;k; & [kkjBk dh izeq[k dfo ,oa mudh dkO;ksa dk fo'ys"k.k

क) आदिकालीन कवि और उनके काव्य (1800 ई0 से पूर्व)

ख) माध्यकालीन कवि और उनके काव्य (1800 ई0 से 1947 ई0 तक)

ग) आधुनिक कालीन कवि और उनके काव्य (1947 ई0 से अब तक)

r`rh; v/;k;& [kkjBk dh izeq[k izca/k dkO;ksa dk fo'ys"k.k

क) प्रबंध काव्य का परिचय

ख) प्रबंध काव्य की विशेषताएँ

ग) खोरठा प्रबंध काव्य के रूप

- महाकाव्य
- खण्डकाव्य

prqFkZ v/;k; & [kkjBk dh izeq[k eqDrd@LQqV dk dkO; fo'ys"k.k

क) मुक्तक/स्फुट काव्य का परिचय

ख) मुक्तक/स्फुट काव्य की विशेषताएँ

ग) खोरठा मुक्तक/स्फुट काव्य के रूप

- गीत
- कविता

ipe v/;k; & [kkjBk dk0; e Hkko i{k dk fo'y"k.k

क) भाव की परिभाषा

ख) भाव के भेद

1) स्थायी

2) संचायी

ग) रस– रस के भेद

"k"B v/;k; & [kkjBk dk0;k e dyk i{k dk fo'y"k.k

कला की परिभाषा

क) छंद ख) अलंकार ग) प्रतिक

घ) बिम्ब ङ) गुण–दोष च) भाषा शैली

llre v/;k; & ie[k i=&if=dkvk e idkf'kr [kkjBk dk0; dk fo'y"k.k

क) राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाएँ

ख) राजकीय पत्र–पत्रिकाएँ

ग) स्थानीय पत्र–पत्रिकाएँ

mil gkj %& निष्कर्ष

ifjf'k"V%& आधार ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

पत्र–पत्रिकाएँ

चित्रावली

vk/kkj xzUFk lwph %&

Ø0 l0	ys[kd dk uke	iqLrd dk uke	izdk'kd	o"kZ
1.	कुमारी, प्रो0 शशि	जिनगीक डहर	यादव कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिंटर्य, सूर्या कॉम्पलेक्स, जीवाजीगंज, ओल्ड हाई कोर्ट ग्वालियर, मध्य प्रदेश	2022
2.	कुमार, डॉ0 विनोद,	सोंध माटी	जनजातीय भाषा अकादमी, राँची,	1990
3.	कुमार, डॉ0 विनोद,	धोवइयाक धमक	झारखण्ड झरोखा	2022
4.	गोस्वामी जनार्दन 'व्यथित'	चाँदीक जूता	बालीडीह खोरठा कमिटि	2002
5.	गोस्वामी जनार्दन 'व्यथित'	लोर	बालीडीह खोरठा कमिटि	2005
6.	झा, डॉ0 ए0 के0,	खोरठा काठेक पइदेक खंडी,	खोरठा ठाकी छेतर कमिटि, कोठार	1983
7.	झा, डॉ0 ए0 के0	खोरठा गइद–पइद संगरह	बोकारो खोरठा कमिटि	1989
8.	झा, डॉ0 ए0 के0,	दू डाइर जिरहूल फूल	खोरठा साहित्य– सांस्कृतिक परिषद् रामगढ़	2017
9.	झा, डॉ0 ए0 के0,	एक टोकी फूल	खोरठा ढ़ाकी छेतर कमिटि कोठार, रामगढ़	1984
10.	बंशी, बंशीलाल	डींड़ाक डोंआनी	बोकारो खोरठा कमिटी	1992
11.	पानुरी, श्रीनिवास	बाल किरण	–	1954
12.	पानुरी, श्रीनिवास	आंखीक गीत	श्री नारायण महतो, धनबाद	2011

lnHkZ xzFk %&

Ø0 l0	ys[kd dk uke	iqLrd dk uke	izdk'kd	o"kZ
1.	प्रमाणिक, शिवनाथ,	तातल आर हेमाल,	खोरठा साहित्य कुटीर, बैदमारा	1988
2.	प्रमाणिक, शिवनाथ,	रूसल पुटुस	बोकरो कमिटी, बोकारो	1985
3.	महतो, डॉ0 गंगाधर	आब ना रहा पटाइल	ब्राइट पब्लिकेशन हरियाणा	2024
4.	महतो, डॉ0 गंगाधर	केंवराक गमक	सफल प्रकाशन, राँची	2023
5.	महतो, संतोष कुमार	एक मउनी फूल,	रामधन प्रकाशन, गंगाजोरी, बोकारो	1988
6.	महतो, संतोष कुमार	एक पथिया डोंगल महुआ	रामधन प्रकाशन, गंगाजोरी, बोकारो	2007
7.	महतो, धनपत	कादो फूल	—	1986
8.	महतो, परस नाथ	के तोञ	खोरठा विकास परिषद् ओरमांझी	2009
9.	महतो, पंचम	ककर नामे लिखब गीत	बालीडीह खोरठा कमिटि	2011

ukV %& 'kk/k ik:i e vko';drk gku ij vkf'kd ifjorlu fd; tk ldr gA

'kk/k funs'kd %

डॉ० जुरन सिंह मानकी
lgk;d ik/;kid] e.Mkjh foHkkx]
,l0,l0 eekfj;y dkyt] jkph
jkph fo'ofo|ky;] jkph

शोधकर्त्ता %

eukt dekj xki
एम०ए० खोरठा
यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०
tutkrh; ,o {k=h; Hkk"kk ldk;]
jkph fo'ofo|ky;] jkph

'kks/k&izk:i

[kkjBk ds izeq[k dfo ,oa muds dk0; % ,d fo'ys"k.kRed v/;;u

पीएचoडीo हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की :i js[kk

tutkrh; ,oa {ks=h; Hkk"kk ladk;

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग

jkaph fo'ofo|ky;] jkaph

o"kZ& 2024

'kks/k funs'kd %

डॉo जुरन सिंह मानकी
lgk;d izk/;kid] eq.Mkjh foHkkx]
,l0,l0 eseksfj;y dkWyst] jkaph
jkaph fo'ofo|ky;] jkaph

शोधकर्त्ता %

eukst dqekj xksi
एमoएo खोरठा
यूoजीoसीo नेट/जेoआरoएफo
tutkrh; ,oa {ks=h; Hkk"kk ladk;]
jkaph fo'ofo|ky;] jkaph